मांगल्य का आवाहन करें

ईशा सरदेसाई

अक्षय तृतीया के सम्मान में 'मन्दिर में रहो' सत्संग
सिद्धयोग वैश्विक हॉल में सीधा वीडिओ प्रसारण
शनिवार, २५ अप्रैल, २०२०

नमस्ते।

आरती के तुरन्त बाद मन्दिर में जैसा वातावरण होता है वैसा शायद ही हो, है न? मुझे अक्सर लगता है कि उस समय वातावरण का कण-कण एक विशिष्ट आभा से चमक उठता है, मानो आरती की नृत्य करती दीपशिखाएँ वायुमण्डल में अपने प्रकाशचिह्न छोड़ गई हों। हम कितने सद्भाग्यशाली हैं कि हम भगवान नित्यानन्द को अपनी पूजा अर्पित कर पाते हैं, उनके मन्दिर में, प्रकाश और गायन के माध्यम से!

आपमें से जो लोग सिद्धयोग पथ की वेबसाइट देखते हैं, उन्हें शायद पता ही होगा कि मैं एक लेखिका हूँ। दरअसल, मुझे शब्दों से प्रेम है। और *विशेष तौर पर* मुझे इस शीर्षक के शब्द बहुत प्रिय हैं जो गुरुमाई जी ने इन सत्संगों को प्रदान किया है : 'मन्दिर में रहो।' मुझे इस शीर्षक के शब्द इतने अर्थपूर्ण इसलिए लगते हैं क्योंकि वे जिस अनुभव का वर्णन करते हैं, उसकी गहराई में वे आपको ले भी जाते हैं। 'मन्दिर में रहो' सुनकर, आप वास्तव में मन्दिर में पहुँच जाते हैं। आप भगवान नित्यानन्द के सान्निध्य में होते हैं। आप श्रीगुरुमाई के सान्निध्य में होते हैं।

आज हम 'अक्षय तृतीया' का पर्व मना रहे हैं जिसे भारतीय पंचांग के अनुसार वर्ष के साढ़े तीन सबसे शुभ दिनों में से एक माना जाता है। भारत में, हर रोज़ एक विशेष समय होता है—एक मुहूर्त होता है—जिसे विशेष तौर पर अति शुभ माना जाता है। तथापि, अक्षय तृतीया पर इस मुहूर्त की कोई आवश्यकता नहीं होती। इस दिन का हरेक क्षण मांगल्यपूर्ण होता है।

सुबह से लेकर रात्रि तक—मांगल्य। शुभ। मंगल।

निस्सन्देह, हम लोगों के लिए जो कि सिद्धयोग पथ पर हैं और जो सिद्धयोग वैश्विक हॉल में हैं, आज का यह दिन कैसा रहा है, उसका यह बिलकुल सटीक विवरण है। आज सुबह हम में से अनेक लोगों ने गुरुमाई जी के साथ 'मन्दिर में रहो' सत्संग में भाग लिया। इस सत्संग में हमने श्रीगुरुगीता का पाठ किया—जिसके वर्ण मन्त्र हैं।

और अब हम यहाँ एक बार फिर एकत्रित हुए हैं। मन्दिर में। सत्संग में। और हमने यह तय किया है कि हम यह समय सिद्धयोग की सिखावनियों के अध्ययन में और पूर्ण निष्ठा के साथ सिद्धयोग अभ्यासों को समर्पित करेंगे।

सुबह से लेकर रात्रि तक—मांगल्य। शुभ। मंगल।

यह सोचना पहले-पहल उत्सुकता को जगाता है और शायद थोड़ा अजीब भी लगता है कि हम ऐसे समय में मांगल्य के अर्थ पर विचार कर रहे हैं—जब वह संसार ही बदल गया है जिसके बारे में हमें लगता था कि हम इसे जानते हैं, जब इसका हुलिया ही बदल गया है, और वह भी इस तरह बदला है जो हमारी समझ से बिल्कुल परे है। तथापि, मैं कहूँगी कि यह तो और भी बड़ा कारण है, उसे याद करने का, जो इस संसार में मांगल्यपूर्ण है और अच्छा है; उसे पहचानने का, उसका आवाहन करने का, उसे अस्तित्व में लाने का। आप भी मानते हैं न?

मांगल्य को पहचानने का, हमारे संसार में भगवान का हाथ है, इसे पहचानने का एक तरीक़ा जो गुरुमाई जी ने हमें सिखाया है, वह है प्रकृति के दर्शन करना—प्रकृति में हमें जो अनन्त रंग, रूपाकार, संरचनाएँ और व्यवहार दिखाई देते हैं, उन्हें निहारना।

गुरुमाई जी के कहने पर वर्ष २०२० के 'अर्थ डे' के उपलक्ष्य में, एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन के वेबसाइट विभाग ने सिद्धयोगियों से यह आग्रह किया था कि वे स्वयं खींची हुई प्रकृति की तस्वीरें भेजें। और . . . आपने सचमुच भेजीं, हमारी आशा से कहीं अधिक तस्वीरें भेजीं! पिछले पूरे सप्ताह के दौरान लगभग पाँच सौ तस्वीरें जो आपने खींची थीं, वे सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर पोस्ट की जा चुकी हैं और इस संकलन का शीर्षक है, "Glimpses of Nature" यानी प्रकृति की झलकियाँ। ये तस्वीरें *मन्त्रमुग्ध* कर देने वाली हैं। जितनी भी प्रकार की धारियाँ, रंग व रूपाकार वाले पशु-पक्षी, फूल और धरती के विभिन्न दृश्य हो सकते हैं, उन सभी को वे दर्शा रही हैं।

इसीलिए गुरुमाई जी ने मुझसे कहा है कि मैं उनकी ओर से आप सभी को आपकी सुन्दर तस्वीरों के लिए धन्यवाद दूँ। आप सभी को धन्यवाद, इस आमन्त्रण के प्रत्युत्तर में आपने इतनी तत्परता से

अपना योगदान दिया और धन्यवाद विश्व के उस भाग के प्राकृतिक दृश्यों को भेजने के लिए, जहाँ आप रहते हैं।

सुबह से लेकर रात्रि तक—मांगल्य। शुभ। मंगल।

इस सत्संग में सिद्धयोग के अभ्यासों—ध्यान व नामसंकीर्तन में भाग लेकर हम आज के दिन में सन्निहित मांगल्य का निरन्तर आवाहन करते रहेंगे। आपमें से जिन्होंने आज गुरुमाई जी के साथ सत्संग में भाग लिया, उन्हें यह झलक पहले ही मिल चुकी है, उन्होंने पहले ही उस नामसंकीर्तन का रसास्वादन कर लिया है जिसे हम गाने वाले हैं। और वह है—'कृष्ण गोविन्द गोविन्द गोपाला।'

जी हाँ। अक्षय तृतीया के सम्मान में हम भगवान कृष्ण का नाम गाएँगे। यह नामसंकीर्तन राग भैरवी में है जिसमें भक्ति और ललक का रस है—ऐसी ललक जिसमें प्रार्थना का स्पर्श है, जिससे एक भक्त अपने हृदय की गहराई से अपने प्रियतम से याचना करता है।

सिद्धयोगी होने के नाते, श्रीगुरुमाई के शिष्य होने के नाते यह हमारा उत्तरदायित्व है कि हम उसे पहचानें जो शुभ है, अपने अन्दर मांगल्य का विकास करें, अपने आस-पास के वातावरण में मांगल्य को प्रकट करें और उसे दूसरों के साथ बाँटें।

यह एक खूबसूरत उत्तरदायित्व है और वास्तव में यह एक बहुत बड़ा उत्तरदायित्व है। मैं इसे इस तरह से देखती हूँ कि श्रीगुरु से सिखावनियाँ प्राप्त करना, श्रीगुरु की कृपा को जानना व उसका अनुभव करना हमारे लिए बड़े सम्मान और महान सद्भाग्य की बात है, और यह उत्तरदायित्व भी इसीका अभिन्न अंग है।

सौभाग्य से, हमारे पास इस उत्तरदायित्व को पूरा करने के अनेकानेक साधन हैं।

उदाहरण के लिए, मैं आप सबको सिद्धयोग पथ की वेबसाइट देखते रहने के लिए आमन्त्रित करती हूँ जहाँ आपको इन सत्संगों में प्रदान की गई गुरुमाई जी की सिखावनियाँ प्राप्त होंगी और जहाँ आप मन्दिर में होने का अपना अनुभव भेज सकते हैं। साथ ही, आप अध्ययन करने के मेरे एक मनपसन्द साधन के लिए भी पंजीकरण करा सकते हैं, यदि आपने इसके लिए अब तक पंजीकरण नहीं कराया हो तो—और यह साधन है, 'श्रीगुरुमाई के वर्ष २०२० के सन्देश पर अभ्यास-पुस्तिका।'

अभ्यास-पुस्तिका में श्रीगुरुमाई हमें हर सप्ताह मनन करने व कार्य करने के लिए एक प्रश्न प्रदान करती हैं ताकि उनके नववर्ष-सन्देश के विषय में हमारी समझ व अनुभव और गहरा हो। कई बार गुरुमाई जी ने हमें कुछ अन्य प्रश्न भी प्रदान किए हैं जो उस सप्ताह के मुख्य प्रश्न के साथ होते हैं और उस मुख्य प्रश्न का गहराई से अन्वेषण करने में हमारी सहायता करते हैं। यह सचमुच सिखावनियों का एक पिटारा है, इसमें प्रचुर सिखावनियाँ हैं।

इससे पहले कि हम समापन करें, मैं आपको एक मधुर प्रसंग सुनाना चाहूँगी जो इस दिन और इस सत्संग से सम्बन्धित है।

जब मैं इस वार्ता की तैयारी कर रही थी, और मांगल्य के विषय पर मनन-चिन्तन कर रही थी कि इसका क्या अर्थ है कि यह दिन वर्ष के साढ़े तीन सबसे शुभ दिनों में से एक है, उस समय मेरे मन में बार-बार एक छवि उभर रही थी। यह छवि उस प्रसंग की थी जो कुछ ही दिन पहले का है, जब मैं गुरुमाई जी से 'मन्दिर में रहो' सत्संगों के बारे में बात कर रही थी। हम उन बड़ी-सी खिड़कियों के पास बैठे थे जहाँ से आश्रम के बगीचे अच्छी तरह दिखाई देते हैं। जब हम बात कर रहे थे, उस समय एक समूचा दृश्य हमारी आँखों के समक्ष प्रकट हुआ।

वहाँ पर अनेक पक्षी थे जो खिड़की के पास आ रहे थे—पहले ब्लू जे [नीलकण्ठ पक्षी जैसा एक पक्षी], फिर कार्डिनल [लाल रंग का पक्षी] और फिर एक छोटा-सा मोर्निंग डव [एक प्रकार का कबूतर]। वे वहाँ सुमधुर स्वर में चहचहाते हुए, हवा में तेज़ी-से उड़ रहे थे और चक्कर काट रहे थे। मैं यह सोचे बिना रह नहीं सकी कि वे सब गुरुमाई जी के दर्शन करने आ रहे हैं—वे प्रेम की उपस्थिति का सम्मान कर रहे हैं, उसे पहचान रहे हैं जो पावन है। सत्संग की तैयारी करते हुए भी मेरे मन में यही छवि बार-बार उभरती रही और मुझे पता नहीं था कि ऐसा क्यों हो रहा है।

फिर, उत्सुकतावश मैंने ढूँढ़ा कि अंग्रेज़ी भाषा के शब्द "auspicious" की व्युत्पत्ति क्या है [मांगल्य के लिए अंग्रेज़ी भाषा का शब्द है "auspicious"]। और पता है मुझे क्या मिला? यह कि इस शब्द का मूल लैटिन भाषा का वह शब्द है, जिसका अर्थ है "शुभ शगुन"—और विशेष तौर पर, पक्षियों का उड़ान भरना शुभ शगुन होता है।

और आपको यह याद होगा कि आज शाम ध्यान करते समय, हमें मन्दिर की खिड़कियों के बाहर पक्षियों का कलरव सुनाई दिया था। तो—मुझे यह सोचकर बहुत अच्छा लग रहा है कि अक्षय तृतीया पर सत्संग में हमारा भाग लेना एक शुभ शगुन है। यह सर्वाधिक मंगलमय है।

‘मन्दिर में रहो,’ गुरुमाई जी की ओर से हमारे लिए प्रसाद है, और इतने सारे तरीक़ों से, इतने सारे उदाहरणों, दृष्टान्तों और संकेतचिह्नों द्वारा, हमें इसका बार-बार स्मरण कराया जाता है।

सुबह से लेकर रात्रि तक—शुभम्। मंगलम्। मांगल्य।

एक बार फिर आप सभी को मेरी ओर से ‘शुभ अक्षय तृतीया।’

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।